INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

राजनीति में दलित महिला सशक्तिकरण : दशा एवं दिशा

डा0 शक्ति गुप्ता
प्राध्यापक– राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय.मौदहा .हमीरपुर

डा0 स्वामी प्रसाद
प्राध्यापक–समाजशास्त्र
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हमीरपुर

विश्व का सभी संस्कृतियाँ पुरूष प्रधान रही हैं. अत. नारी को सर्वत्र द्वितीय श्रेणी की नागरिकता प्राप्त हुयी। मानव इतिहास के दीर्घ परम्परा में ऐसी अनके ओजस्वी नारियों हुई, जिनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाता है तथापि पुरूष ने नारी को भोग्या वस्तु माना और उसे घर की चहारदीवारी में सीमित रखा। उसे शिक्षा से दूर रखा गया और जो उत्तरदायित्व नारी जीवन के लिये तय किये गये उहाँने उसे सस्थागत मूल्यों के सहारे आजीवन कमजोर बनाये रखा। महिला सशक्तिकरण एक गुणात्मक मानक है। किसी सामाजिक इंकाई में सशक्तिकरण के स्तर का मापन किसी भौतिक उपकरण द्वारा नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत शोध हेतु में सशक्तिकरण के स्तर का मापन करने के उद्देश्य से निदर्श विधि द्वारा 300 दलित महिलाओं का चयन किया गया और उनसे प्राप्त उत्तरों के मूल्यांकन द्वारा सशक्तिकरण के स्तर को मापने का प्रयास किया गया है। इसमें सम्मिलित सभी सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक सूचनाओं का मूल उद्देश्य दलित महिलाओं को उनके सामाजिक राजनीतिक व आर्थिक अधिकारों की जानकारी प्रदान कर उनमें आत्मविश्वास का संचार करना, जागृति पैदा करना, स्वयं निर्णय निर्धारण शक्तियों का विकास करना एवं समाज के विकास की मुख्य धारा से जोड़ना है। भारत में नारी की स्थिति प्राचीन परम्परा से जुड़ी हुई है। यहाँ विभिन्न जातियों, धर्मों, सम्प्रदायों एवं मान्यताओं का विशाल रूप है। यही कारण है कि नारी इन परम्पराओं को एकदम छोड़ नहीं पाती अर्थात् वह अपने सांस्कृतिक एवं पारिवारिक परिवेश से मुक्त होने की बात सोच नहीं पाती। अतः कहना ना होगा कि उसकी यह पराधीनता काफी लम्बी रही है। पिछले दो दशकों में महिलाओं की समस्याओं से संबंधित अधिकार, कर्त्तव्य एवं समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने के लिये स्वय महिलाओं में बहुत जागरूकता आयी है। इन दशकों में महिला चेतना संबंधित विभिन्न भव आर्थिक स्वावलम्बन राजनैतिक भागीदारी सामाजिक भेदभाव खत्म करने समान रोजगार शिक्षा का अवसर प्रदान करने महिलाओं को समानता दिलाने और उनके सशक्तिकरण

तथा महिला स्वास्थ्य से जुड़े मुददे बड़े सशक्त ढंग से उठाये गये। इसका परिणाम समाज के नजरिये में बदलाव के रूप में सामने आया। अपने शरीर स्वास्थ्य चिकित्सा प्रजनन क्षमता, भ्रूण का लिग परीक्षण इत्यादि के मामलों में नारी में स्वंय फैसले लेने की चेतना बढ़ी है। इन सभी प्रयासों का परिणाम यह हुआ है कि महिला स्वास्थ्य को सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक वैचारिक एवं सांस्कृतिक कारकों से जुड़ा माना जाने लगा है। महिलाओं के विकास के लिये अनेक कानूनी व्यवस्थाओं से उनके अधिकारो को संरक्षण प्रदान करने के साथ– साथ सरकार द्वारा अनेक विकास कार्यक्रमों एवं कल्याणकारी योजनाओं का संचालन किया जा रहा है. जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार आ सके तथा राष्ट्र के विकास में उनकी भागीदरी सुनिश्चित हो सके। महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने और आय बढ़ाने हेतु शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण के अनेक उपयोगी कार्यक्रम एवं योजनाएं सचालित है। विपत्ति में पड़ी महिलाओं के पुनर्वास हेतु प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना, कामकाजी महिलाओं के लिये छात्रावास की व्यवस्था, पारिवारिक समस्या, मानसिक तनाव, सामाजिक प्रताड़ना, शोषण से ग्रस्त महिलाओं के लिये अल्पावधि निवास सदन की स्थापना आदि महत्वपूर्ण प्रयास किये जा रहे हैं। महिलाओं पर अत्याचार रोकने, सामाजिक चेतना और जागरूकता उत्पन्न करने हेतु प्रचार प्रसार के माध्यमों का भी उपयोग किया जा रहा है। यद्यपि अभी भी भारतीय नारी सशक्त बनने की ओर अग्रसर है, उसकी स्थिति में सुखद परिवर्तन हो रहा हैं। समाज में उन्हें वांछित एवं सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने हेतु अभी इस दिशा में बहुत कुछ करना शेष है। वास्तविकता यह है कि महिलाओं की स्थिति बदलने के लिये हमारे अनेक दावों तथा नारी आन्दोलनों के विकास यात्राओं के बावजूद, समाज की सोच, रवैया, पूर्वाग्रह युक्त मानवोचित मानसिकता में जो परिवर्तन आ रहा हैं. उसकी गति थोडी धीमी है। 21 वीं शताब्दी की चुनौतियों का सामना करने हेतु अब भी हमे यह चेतना व लडाई तब तक जारी रखना है जब तक की महिलाओं को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बराबरी का दर्जा एव सम्मानजनक स्थान उपलब्ध न हो जाये। यह बात भी यथार्थ है कि देश की आजादी के बाद दलित वर्ग के पुरूषों व महिलाओं के उन्नयन और विकास के संबंध में बहुत सारे प्रावधान किये गये हैं। पुरुषों के समान राष्ट्र की विकासधारा में नारी शक्ति भी मुख्यधारा बन सके, इसके लिये कानून भी बने और सोचा गया कि राजकाज में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जाये तो महिलाओं के प्रतिनिधित्व से बहुत सारी समस्याओं का निराकरण हो सकेगा। लेकिन ठीक इसके विपरीत राजघराने, उच्च वर्गीय साधन सम्पन्न महिलाओं ने उनका स्थान ले लिया और 85 प्रतिशत सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनैतिक रूप से पिछड़ी वंचित महिलायें जहाँ की तहाँ रह गयी। इससे स्ष्ट है कि जब तक 85 प्रतिशत महिलाओं को आत्मनिर्भर और समुन्नत नहीं बनाया जायेगा तब तक इनके नाम से सत्ता में भागीदारी कोरी कल्पना रहेगी। 1993 में देश के संविधान में सशोधन किया गया, यह 73 वां संवैधानिक संशोधनश था. जिसके द्वारा पंचायती राज पूरे देश में ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत समिति तथा जिला पंचायत के तीनों स्तरों पर कार्य करेगा और इसके सभी पद सीधी चुनाव प्रक्रिया से भरे जायेगे। महिलायें अपने घर की चारदिवारी में

ही कैद ना रहे, अपितु शासनतंत्र में भी पुरुषों के समकक्ष अपनी भागीदारी का निर्वाह कर सकें। इसके लिये तीनों स्तरों पर महिलाओं के लिये 33 प्रतिशत स्थान आरक्षित किये गये किन्तु महिलाओं की स्थिति पूर्ववत बनी रही, वे घूंघट, परदा और अंगूठा निशानी में ही सिमटी रही और उनके प्रियजन उनकी बेबसी का नाजायज फायदा उठाकर उनका प्रतिनिधित्व एवं संचालन करने लगे और व्यवस्था की निचली ईकाई को कमजोर कर दिया। पंचायतीराज तो कायम हो गया पर कुछ हद तक वह प्रभावी भूमिका अदा नहीं कर पा रहा है। भारतीय समाज परम्परागत रूप से जातिगत खंडात्मक संस्तरण व्यवस्था पर आधारित है। इस व्यवस्था के अर्न्तगत व्यक्ति की कुलीनता एवं सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारण उसकी योग्यता नही वरन् उसके जन्म के आधार पर होता है।

आधुनिक जीवन शैली तथा प्रतिस्पर्धापूर्ण जीवन में हमारा आत्म विश्वास क्रमश कम होता जा रहा है। आधुनिक भारत में महिलाओं को दो वर्गों में रखा जा सकता है प्रथम मेहनतकश अशिक्षित वर्ग, दूसरा सुविधाभोगी शिक्षित और जागरूक वर्ग। सुविधाभोगी शिक्षित महिलाओं को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। उनमें से पहली सुविधा सम्पन्न, बिना काम धंधे अथवा समय काटने के लिये नौकरी करने वाली व दूसरी जरूरतमंद नौकरी करने वाली। पहले वर्ग की ज्यादातर महिलायें कोई खतरा उठाये बिना आराम की जिंदगी बसर करना चाहती है। बड़े अफसर, उद्योगपति, डाक्टर इंजीनियर, व्यवसायी पतियों को पाकर ये महिलायें दुनिया की गरीबी और संघर्ष से कन्नी काट लेती है। इनकी सोच बदल जाती है, यहाँ तक की दूसरी महिलायें इनकी नजर में हेय दिखाई देने लगती है। ऐसी ही नारियां पिछले दरवाजों से राजनीतिक संरक्षण तथा अपने धनी पतियो के सहयोग से संसद और विधानसभाओं में आरक्षण के बहाने भागीदारी चाहती है। इसका सबसे उत्तम उदाहरण पंचायती राज व्यवस्था है, जहाँ ये आरक्षित महिलायें अपने पतियों के संरक्षण में राजकाज संभाल रही है और उनका सारा काम उनके पति कर रहे है। भारतीय महिलाओं का दूसरा बहुत बड़ा वर्ग अशिक्षित मेहनतकश महिलाओं का है। इनमें गाँवों और शहरों में रहने वाली दलित जातियों और गरीबों की स्त्रिया आती है। ये खेती, घरों और लघु उद्योगों आदि में मजदूरी करती है। ये आर्थिक रूप से अपने स्तर पर स्वतंत्र होती है. परन्तु अशिक्षा और अज्ञान के कारण इनमें हीनता बनी रहती है, इसलिये ये अपने पतियों के अधीन रहकर उनके अत्याचार भी सहती है और अपनी ही जाति के सम्पन्न लोगों की प्रताड़ना भी। स्वतंत्र चिंतन की क्षमता ना होने से ये सभी मनुष्यों से दलित व शोषित जिंदगी गुजारती है। आज के हालात को देखते हुए महिला वर्ष हो. महिला दिवस हो या महिलाओं से संबधित तमाम सम्मेलन संगोष्ठी विचार मंच आदि वास्तविकता यह हैं कि दलित महिलायें टूटते उलझते जीवन मूल्यों के बीच ठिठकती हई खड़ी है।

संदर्भ –

वी पैरेटो – माइंड एंड सोसाइटी

पी डी पाठक – भारतीय शिक्षा की समस्याएं
रजनी कोठारी – कास्ट इन इंडियन पालिटिक्स
अटल योगेश – लोकल कम्यूनिटीजएंड नेशनल पालिटिक्स
डी एन मजूमदार – रेशेज एंड कल्चर्स इन इंडिया
भारत की जनगणना 2011
जनसत्ता – नई दिल्ली
आहूजा, राम, पालिटिकल इलिट्स एण्ड मॉर्डनाइजेशन : द बिहार पालिटिक्स, मेरठ, मीनाक्षी प्रकाशन,
शर्मा, एस.एस., रूरल इलिट इन इंडिया, न्यू देहली, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि. 1979, पृ. 193
सिबर्ग, जी.एण्ड नैट, आर, ए मैथडालॉजी फार रिसर्च, न्यूयार्क, हारपर एण्ड रॉ, 1968, पृ. 169–177
मेहता, चेतन, युगदृष्टा डा. भीमराव अम्बेडकर, जयपुर, मलिक एण्ड कं. (प्रकाशन), 1991, पृ. 11
इबिद, पृ. 14
देशपांडे, वसन्त, 1978, इबिद, पृ. 225
जाटव, डी.आर., 1993, इबिद, पृ. 262
दलित एशिया टुडे (मासिक), मार्च, 1995, लखनऊ, पृ. 21
दलित साहित्य के विस्तृत अध्ययन के लिये देखें– बहुजन संगठक (साप्ताहिक, नई दिल्ली, दलित
पैंथर,

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM